No 33

39

29

'स्वातन्त्र्य दीपिका'
– सूत्र सटीक.

(मनकाराम कृत)

39

स्वातन्त्र्य दीपिका
सूत्र सटीक

~~No - 33~~

(29)

[illegible]

ठि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अत्र
यावदवृ
ति भागस्थ
प्रतिः
कृतास्ति

सं० ११ ...तन्त्रप्रदीपिका 39

M.K. Marwa[illegible]

[illegible]

𑆠𑆡𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆠𑆸𑆱𑆩𑆓𑇀𑆫𑆵𑆓𑇀𑆫𑆲𑆟𑆱𑇀𑆡𑆳𑆥𑆴 𑆫𑆯𑇀𑆩𑆴𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆩𑆶𑆒𑆢𑆂

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆨𑆷𑆠𑆑𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆑𑆂 𑆪𑆠𑆂 𑇆 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆤𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫

𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆬𑆾𑆑𑆂 𑇆 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆥𑆴 𑆫𑆷𑆥𑆳𑆟𑆳𑆁 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆨𑆷

𑆠𑆑𑆂 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆤𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆠𑇀 𑆤𑆴𑆫𑆳𑆨𑇀𑆫𑆑𑆩𑆤𑆤𑆱𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤

𑆠𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆪𑆠𑆴 𑆤𑆲𑆴 𑆥𑆢𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆢𑇀𑆫𑆷𑆥𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆩𑆼𑆮 𑆮𑆴

𑆤𑆳 𑆑𑆯𑇀𑆖𑆴𑆠𑇀 𑆤𑆴𑆒𑆴𑆬𑆥𑆢𑆳𑆫𑇀𑆡𑆥𑇀𑆫𑆥𑆚𑇀𑆖𑆼 𑆪𑆢𑇀𑆪𑆥𑆴 𑆑𑆴𑆚𑇀𑆖𑆴

𑆢𑇀𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆁 𑆱𑆠𑇀𑆠𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆰𑇀𑆜𑆳 𑆱𑆠 𑆠𑆠𑇀𑆠𑆩𑆼𑆮 𑆠𑆢𑇀𑆫𑆷𑆥𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆑𑆩𑆤𑆩𑆳

𑆪𑆠𑇀𑆠𑆶 𑆱𑆑𑆬𑆥𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑆴𑆂 𑆱𑆑𑆬𑆥𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑆴𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆱𑇀𑆪

𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆑𑆂 𑆱𑇀𑆥𑆤𑇀𑆢𑆤𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆵𑆪𑆠𑆼 𑆪𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆱𑆶 𑆱𑆂 𑆱𑆴

𑆠𑆴 𑆮𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆑𑆡𑇀𑆪𑆠𑆼 𑇆 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆂 𑇆 𑆪𑆳𑆱𑆳𑆁 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆢𑆴𑆑𑇀𑆠𑆤

𑇑 𑆱𑆠𑇀𑆠𑆳𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆮𑆴𑆯𑆴𑆰𑇀𑆛𑆁 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆁 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆤𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆠𑇀

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रूपेषु मन्त्रं त्रिधा मया मायाप्रतीयेत तत्पदैः

मन्त्रं सम्पूर्णं इति [illegible] शीर्षं मन्त्रसिद्धैर्गतैर्नुलेः

पुत्रेपि [illegible] इति [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ठावनावलेन विकसितसमस्ति, विठवः पुष्पग

मस्रौकद्रुठवः यमातु मद्रुयामातु पूर्वमातुम्मय

तवत्रिस्रुति तमानदमेपि विठानामूद्रुमुषायिर

हिं मित कामसुद्रुपमेषाव त्रिस्रुते मनूंतस्रुकावं

सुद्रासुद्र विमेषविमेषितं कवंजन्ते यलक्षुते ॥

सेमद्रुहातिश्च ॥ यथा निगदन्स्नुतस्नुपेठ

नवाननभयेमवः पूकामानन्न मामास्रुषुद्रुयान्द्रु

ममकलाद्रुक मनदतठद्रुरकायूमवतुं निम

नत्रि ममवायिकं ठितितुतस्रुाम्न कामे सुविस्रुकं

ति उघानया ताशताशतान्द्र मास्निष्टखि स्निटवठ

मनास्नि मात्रि मामाना यिकाल्ल मद्रेताद्रुंद्रायकं

ति

१०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑇑𑇐 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

यावद्भिस्तिथिभुक्ता तिथिर्भुक्त्या शीलयति तः

सूर्य्यविकलया विमीलयति यतुश्चैव सूर्य्येवलं

तश्चैकद्वादश एवमाविनाडिकास्तदा शीयस्य सु

मण्डले नविंशेषफलं सुधवीप्रमाणति साधि

कमवमेव द्वीकस्तं कमधमशुद्धेवामशुद्धं ॥

कल्पयं प्रकारः ॥ यतः सर्वासंज्ञाश्चान्द्रवशीनं

प्रमाणविद्धत्रिभागे मिश्रकाम पृथैवौदयिकद्धकाम

प्रकामवाङ्मंविश्म त्रागातुरे प्रतिविभृता विष्णुः

तण्डताब्धावण्डान्यूकामयद्व तद्भूयाग सानी ।

यच्चैवामिश्रे सूर्य्यणवम्सूले सफलेनसमसुवसुष

तयः ऽसासुः प्रतिविघ्नत्रिसासीवतलाभूसानति

𑆁𑆱𑇀𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳𑆩𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳𑆁𑆪𑆳𑆁𑆖𑆑𑆸𑆠𑇀𑆮𑆳𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣𑆩𑆥𑇀𑆪𑆁𑆑𑆤𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆁𑇆

𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆢𑆼𑆰𑇀𑆛𑆑𑆳𑆂 𑇆 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆢𑆼𑆩𑆢𑆩𑆪𑆳𑆤𑆶𑆥𑆩𑆴𑆠

𑆩𑆴𑆢𑇀𑆣𑆴𑆥𑇀𑆫𑆥𑆳𑆢𑇀𑆪𑆼𑆯𑇀𑆫𑆳𑆤𑆸𑆠𑇀𑆮𑆳𑆤𑇀𑆤𑆴𑆠𑆼𑆱𑆶𑆛𑆱𑆶𑆜𑆳𑆥𑆼𑆤𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆼𑆢

𑆲𑆼𑆈𑆬𑆤𑆫𑆬𑆳𑆠𑇀𑆫𑆑𑆳𑆂 𑆢𑆼𑆪𑆩𑆴𑆠𑆴𑆮𑆴𑆩𑆳𑆂𑆥𑆢

𑆠𑆶𑆬𑇀𑆬𑆩𑆴𑆠𑆩𑆳𑆪𑆩𑆴𑆢𑇀𑆣𑆴𑆥𑇀𑆫𑆥𑆳𑆠𑆼 𑇁𑆑𑆷𑆱𑆬𑇀𑆬𑆩𑆴𑆮𑆽𑆠𑇀𑆫𑇀𑆪

𑆬𑆴𑆑 𑇁𑆮𑆣𑆱𑆶𑆠𑆴 𑆠𑆩𑆳𑆤𑆶𑆢𑇀𑆪𑆳𑆥𑆶𑆬𑆪𑆳𑆤𑆶𑆓𑆠𑆠𑇀𑆫𑆳𑆤𑆶𑆫𑆾

𑆜𑆮𑆠𑆴 𑆤𑆫𑆵𑆩𑆴𑆩𑆼𑆩𑆴𑆢𑇀𑆣𑆴𑆥𑇀𑆫𑆥𑆳𑆢𑇀𑆪𑆼𑆑𑆮𑆁𑆛𑆟𑆜𑆁𑆑

𑆠𑆶𑆁𑆩𑆠𑇀𑆫𑆪𑆳𑆬𑇀𑆥𑆴𑆠𑆳𑆢 𑇆 𑇒𑇕 𑇆 𑆪𑆽𑆬𑆮𑆸𑆲𑆮𑆴𑆥𑇀𑆫

𑆢𑇀𑆮𑆴𑆮𑆸𑆢𑇀𑆣𑆩𑆪𑆥𑇀𑆫𑆼𑆮𑆸𑆲𑆢𑆜𑆳𑆤𑆴𑆤𑆱𑆶𑆫𑆱𑆳𑆢𑇀𑆣𑆽𑆤𑆬𑆳𑆜𑆼𑆤𑆱𑆶

𑆱𑆶𑆜𑆥𑆽𑆤𑆢𑇀𑆮𑆽𑆬𑆳𑆩𑆼𑆤𑆥𑆠𑇀𑆫𑆴𑆥𑇀𑆫𑆓𑆴𑆠𑆳𑆜𑆴𑆬𑆳𑆣𑆂𑆩𑆳𑆪

𑆮𑆩𑆖𑆳𑆑𑆠𑇀𑆑𑆽𑆠𑇀𑆫𑆬𑆮𑆼𑆩𑆩𑆂 𑆠𑆩𑆼𑆮𑆠𑇀𑆑𑆶𑆢𑆮𑆠𑆴 𑇆

𑆫𑆾

𑇐𑇕

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
10 [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

स्वाङ्कभवा। ॥ सतत्त्वेन मितश्चलवेवर्तमानमु
पार्थिवः स्वविज्ञानादेवपरेदं सः शिवः पाम
कालमिति श्रितं इदं प्रत्यक्षमन्त्रः सर्वज्ञा प्रतिरूपम्
[illegible] कल्पनादि
तत्त्वरूपः सं शब्दं यथेष्टं कोटि यत्नं त
[illegible]
[illegible] इति सर्वसमार्थेऽ
वर्तमानमुखवर्त्ति तिसाद ॥ प्रविष्टः ॥ स
रतुराज्ञा समा सुपा नीविते तु विश्वका लस
तं ज्ञ्यो लप्रवयि ज्ञाव निमीलन वर्तु सलिग
मरुप्रविष्टः सप्तवर्त्ता पदमा रूप ल ग्रते य

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ति [illegible]

०७ [illegible]

[illegible]

10

[illegible] वृत्तिं [illegible] भवति ॥ अथ मित्रत्वादिक

वृत्तिः ॥ [illegible]

[illegible] मित्रत्वादिकं [illegible]

[illegible] वृत्तिः ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] भवति [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ अथ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] मित्रत्वा [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

१३ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वि [illegible]

३८ [illegible]

[illegible]

उत्पन्नेषु प्रतिपत्तव्यः ॥ यथा धर्मेषु युगाः यु

गान्तेषु प्रतिपत्तव्यः तथा तेष्वेव धर्म

[illegible]

[illegible] भावधर्म [illegible] ः

[illegible] प्रतिपत्तव्यः

[illegible] ः [illegible]

[illegible] ः [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆠𑆢𑆼𑆯𑆤𑆳𑆓𑆠𑆳𑆱𑆑𑆁𑆬𑆾𑆑𑆠𑆪𑆁𑆠𑆑𑇀𑆰𑆪𑆳𑆑𑆬𑆑𑇀𑆰𑆠𑆢𑆂

𑆱𑆮𑆱𑆼𑆯𑆩𑆶𑆱𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑𑆓𑆫𑆶𑆑𑆁𑆱𑇀𑆠𑆮𑆳𑆠𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆼𑆯𑆠𑆱𑆳𑆮𑆴𑆥

𑆠𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆼𑆥𑆫𑆱𑆳𑆓𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆢𑆶𑆠𑇀𑆫𑆼𑆥𑆱𑆮𑆼𑆢𑆶𑆯𑆱𑆱𑇀𑆥𑆼𑆢𑆮𑇀𑆫𑆼𑆢𑆠𑇀𑆫

𑆤𑆴𑆱𑇀𑆩𑆶𑆢𑆳𑆥𑆢𑆂𑆤𑆠𑆠𑆂𑆱𑇀𑆩𑆴𑆠𑆥𑆶𑆯𑇀𑆥𑆼𑆱𑆠𑆴𑆢𑆵𑆑𑆴𑆠𑆴

𑆬𑆑𑇀𑆰𑆶𑆯𑆵𑆑𑆵𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆁𑆥𑆠𑆁𑆢𑆳𑆱𑆴𑆢𑇀𑆫𑆶𑆥𑆢𑆴𑆑𑆵𑆬𑆼

𑆱𑆼𑆑𑆼𑆤𑆬𑆠𑆴𑆱𑆥𑆬𑆼𑆑𑇀𑆰𑆤𑆬𑆼𑆱𑆥𑆢𑆴𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑆮𑆼𑆱𑆱

𑆮𑆴𑆤𑆠𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆢𑆴𑆱𑆼𑆠𑆮𑆴𑆱𑆳𑆢𑆳𑆢𑆼𑆂𑆱𑆳𑆮𑆁𑆤𑆳𑆬𑆴𑆠𑆮

𑆥𑆶𑆰𑆼𑆮𑆼𑆱𑆢𑆱𑆼𑆠𑆼𑆮𑆴𑆪𑆳𑆤𑆢𑆶𑆠𑆮𑆼𑆱𑆬𑆬𑆱𑆤𑆁𑆢

𑆤𑆠𑆱𑆴𑆢𑆱𑆼𑇅 𑆥𑆱𑆮𑆼𑆱𑆴𑆠𑆮𑆼𑆤𑆶𑆱𑆴𑆱𑆶𑆱𑆴𑆢𑆼𑆮𑆮𑆴

𑆠𑆴𑆥𑆼𑆱𑆱𑆼𑆢𑆼𑆤𑆵𑆠𑆢𑆮𑆶𑆥𑆴𑆬𑆑𑆬𑆤𑆳𑆢𑆶𑆮

𑆥𑆢𑆂𑆱𑆱𑆁𑆥𑆠𑆵𑆮𑆠𑆂𑆑𑆳𑆬𑆥𑆢𑆤𑆳𑆯𑆳𑆢𑆴𑆠𑆱𑆁

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ति यथा दर्शितनाम्न्यः शिवलिङ्गेष्वपि सा

नामाद्यावृत्त्यन्यभीत श्रुत्वा पश्चिमान्त्याः प

ञ्चौ तिकं सती सिद्धेशान्ते समाप्य परिगृह्य श्री

रे श्रीः पूर्वपदेषु शिवलीनाङ्गवत्ति सर्वम्पुत्रप्य

सेवप्रकाशेनान्यत्सु मात्रत्र द्वितीयाख्येन्ये यथा

पूर्वनायिपरिवृत्तिसिद्धिकानामत्र पासेवगमस्ति

पादस्यनिवृत्तमिति शिवमा ॥ इति श्रीम

न्महेश्वरानन्दविरचितायां [illegible] दीपि

कायां [illegible] नाम तृतीयो

ल्लासः ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
ति [illegible]
33 [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्तुवैर्वेश्मील्यधिर्व्यात्तम्स्तु सुतुकतयाधुष्करस

धुतुपेम स्त्रमाकोश्वस्द्रेवकमकमाघेते तत्रम

गीमयमुतत्त्वने तत्त्वपागाह्नतत्त्वा। तु विधन

नदितत्त्व तिन्निकि च्चिग माविविभूयद्देनत

तत्त्वठथवीठना ह्नेतत्त्व पागे विधतमह्लमा

मन्निर तिठर तथा मवभूलन धृतपथात

मों मन्त्रे वनपग ॐ विमेधेम्भेषठ पग मा कुरुमे

वधुततुमुमाद ॥ ववभृतुयेवीगः ॥ मवाम

मपमं हृतवत्तीनं मकृतीनं मेक मप्लहु भूमगव

मेगतत्त्वने विमीत्लधृतपथे तुरविद्विमेधेमेष

मुभिमर्वा तत्त्वद मेवसिवे निहे धुहर्वलाम्न्न सि

[illegible]

[illegible]

तः ॥ अथ [illegible]तमः पटलः ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

ट्टात्मनः सुदंष्ट्रस्येवासुष्ट्रिमिश्रसकम
वलिवितीहातुमवश्रुश्रुतुपेयुमा ल्यु मेयस्म
केविश्ववेमितुभवान्नयुल नश्रुतुपः पः यूमात्
कपवादंभुक्षुद्रसुठवात्रटदुवामामि नमउ
तुम्मासुमद्दुठवसुत्रषाठवः सुदंष्ट्रउमश्र
कसुठवद्वात्। सुदंष्ट्रत्रयः मवद्युविनउसु
ठवः मवउमेमकः नृउमेवसृलीकीर्तितः ॥ सत
स्तुतीनं भवता ॥ सुदमेवसुमत्रिवेठं मव
ठि उयषायेहं सठ्यचित्वा त्रियुल्ले केसुमसृ विव
३८ रमापि मनादि मश्चिमनाम्योउक श्रिकुडापि सुहप
रेयवुउ सरु मिवमवान्नयुल नश्रुतुपधाति

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उक्तनयेन सितत्वमेतत् परिशमनाय मतिं सि-
तावत्के स्थितिविश्वाद्ये स्फुरत्तात्मत्वं पायायाः उपपत्ति
भेदविहितं विश्वतु विश्वं महत्वादिं महत्वपरमा-
र्थं ईश्वरतापत्तिः स्वात्मके परमात्मनः सं विश्वरूपत्व
महत्वमेव निरूपणं विश्वरूपत्वं स्वरूपं भूतभावात्मक
भुवनमात्रपरमेश्वरा विश्वमयत्वमुत्तीर्णत्वं तीर्ण
समस्तं समस्तेभि यतः ॥ सिद्धं भूतत्वः ॥
स्वरूपमेव महत्वादिरूपः परमात्मनः पूर्णे
वि मेतत्त्वमेवं विश्वमयत्वेपि विश्वोत्तीर्णत्वे सिद्धोत्ती-
३५ र्णत्वेपि विश्वमयत्वं न सममपि ...
कं तीर्णं रूपात्मकमस्तु परत्वेन यथासिद्धम-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भिन्नमुद्गकं किं तित्कृते स्वात्मप्रकाशे तेनायं प्रक
मयित्वा निमील्य यित्वा प्रकाशमानमात्मकं स्वमुद्
येस्फुरत्तत्स्फुरत्तामेव भावव्रजस्वरूपं प्रकृत्य नीशम्
ज्ञा सुसंभावनासौ नाम तत्र तदेव प्रकाशनमात्र
मात्रीं शिवमञ्जिततत्वस्वरूपं तयोः भासस्व
रूपं तेषां ह्लादयेति क्रमितं निमज्जनं जिंतायन्तु
कलीकरोति ॥ प्रकाशमानो महाप्रकाशः ॥ यत
तु गगनत्वं स्वरूपे महाप्रकाशात्म सेनन्दनेति नाप्र
ति॰ काशनमतः प्रकाशमानः प्रकाशनं किमतः स्फुरत्
४ ण्डकं ततः प्रकाशेन तेन सुसंपन्नाभितो निरवच्छिन्न
गगनादि नील सुखादीनि प्रतिष्ठमत्र तदानीं प्र

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ति. [illegible]

[illegible]

93 [illegible]